आचार्य यार्लगड्डा लक्ष्मीप्रसाद

हिंदी प्रचार और साहित्य के विकास में आंध्र प्रदेश एवं तेलंगाना का योगदान

दक्षिण भारत में हिंदी का प्राचारः

विशाल भारत को एकता के सूत्र में बाँधनेवाला महत्वपूर्ण आंदोलन देश के अहिंदी प्रांतों में हिंदी-प्रचार का आंदोलन है। अहिंदी प्रांतों का एक बृहद क्षेत्र दक्षिण भारत है। दक्षिण भारत में विधिवत् हिंदी प्रचार पूज्य बापूजी के प्रयास से लगभग एक सौ वर्ष पूर्व सन् 1918 में आरंभ हुआ था। यों राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी के प्रचार का विचार बहुत पुराना था। राजा राममोहन राय, महर्षि दयानंद सरस्वती, पंडित मदनमोहन मालवीय तथा दक्षिण के विद्वान वी.कृष्णस्वामी अय्यर ने समय-समय पर यही विचार व्यक्त किया था कि हिंदी ही भारत की राष्ट्रभाषा बनने की योग्यता रखती है। राष्ट्रीय आंदोलन के जोर पकडने के साथ ही 'राष्ट्रभाषा' की भावना और कामना भी सुदृढ़ होती आयी। राष्ट्रभाषा के अस्तित्व को राष्ट्र के स्वाभिमान का प्रतीक माना गया। जनजागरण के साथ ही यह भावना जनता में पनपती आयी।

'हिंदी साहित्य सम्मेलन' के इन्दौर अधिवेशन के अध्यक्ष महात्मा गांधीजी ने देश के बडे-बडे दार्शनिकों एवं विद्वानों से परामर्श करके 21 मार्च 1918 को घोषित कर दिया था कि हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाकर देशभर में उसका प्रचार किया जाये। इससे देश में भावात्मक एकता विकसित होगी। यह एकता राष्ट्रीय आंदोलन को बल पहुँचा सकेगी। उन्होंने यह सोचा कि राष्ट्रभाषा प्रचार को एक आंदोलन के रूप में चलाया जाये। पहले पहल दक्षिण भारत में हिंदी प्रचार शुरू करने पर आशय की सिद्धि जल्दी हो सकती है। क्योंकि भाषा-भेद को लेकर जितनी अधिक समस्या दक्षिण में है, उतनी उत्तर में नहीं है। सम्मेलन के बाद गांधीजी ने दक्षिण के प्रमुख नेताओं से लिखा-पढ़ी की और अखबारों में लेख भी लिखे। इससे दक्षिण के कुछ उत्साही देशप्रेमी युवकों का ध्यान हिंदी की ओर आकृष्ट हुआ। उन्होंने गांधीजी से प्रार्थना की कि हिंदी पढ़ाने के लिए एक योग्य अध्यापक को दक्षिण में भेजा जाये। तब गांधीजी ने अपने छोटे बेटे 18 वर्ष की उम्र के देवदास गांधी को मद्रास में भेजा था। दक्षिण में हिंदी का पहला वर्ग 12 मई 1918 को होमरूल लीग के कार्यालय में शुरू हुआ। हिंदी प्रचार की उद्घाटन सभा की अध्यक्षता डॉ.इ.पी.रामस्वामी अय्यर ने की थी और उसका उद्घाटन श्रीमती एनी बेसेंट ने किया था।

दक्षिण के युवा और युवतियाँ गांधीजी से प्रेरणा पाकर हिंदी सीखने प्रयाग गये। पहले दल में पंडित हरिहर शर्मा तथा उनकी पत्नी, श्री वंदेमातरम् सुब्रह्मण्यम और उनकी पत्नी तथा पंडित शिवराम शर्मा थे। वे हिंदी सीखकर लौटे और यहाँ हिंदी प्रचार के कार्य में लग गये। गांधीजी की प्रेरणा से दक्षिण में हिंदी प्रचारार्थ कई नवयुवक यहाँ आये, जिनमें पंडित रामानंद

शर्मा, पंडित प्रतापनारायण वाजपेयी, श्री क्षेमानंद राहत, श्री रामभरोसे श्रीवास्तव, पंडित हृषीकेश शर्मा, पंडित अवधनंदन, पंडित रघुवरदयाल मिश्र, श्री जमुना प्रसाद, पंडित देवदूत विद्यार्थी, पंडित रामगोपाल शर्मा उल्लेखनीय हैं। इन्होंने दक्षिण के कई प्रांतों में राष्ट्रभाषा प्रचार के कार्य को बडी निष्ठा से चलाया था। देवदास गांधी ने हिंदी वर्ग आरंभ किया तो श्री सदाशिव अय्यर, श्रीमती अम्बुजम्माल, श्रीमती दुर्गाबाई, श्रीमती रुक्मिणी लक्ष्मीपति जैसे मद्रास के कई दिग्गज हिंदी सीखने आये।

सन् 1918 से 1927 तक दक्षिण भारत में हिंदी प्रचार का कार्य 'हिंदी साहित्य सम्मेलन' प्रयाग की ओर से 'सम्मेलन शाखा कार्यालय' के नाम से संपन्न हुआ था। आगे चलकर यही संस्था स्वतंत्र हिंदी संस्था के रूप में राष्ट्रभाषा प्रचार के कार्य में जुट गयी, वही 'दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा' के नाम से विख्यात हुई। 'सभा' की पहली कार्यकारिणी समिति बनी तथा गांधीजी उसके आजीवन अध्यक्ष चुने गये। सन् 1920 से 1936 तक 'सभा' ने दक्षिण के चारों भाषा-भाषी क्षेत्रों में राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रचार को जोरदार रूप में चलाया। हिंदी पढ़नेवालों के लिए नई-नई रीडर, स्वयं बोधिनी, व्याकरण आदि पुस्तकों के निर्माण पर विशेष ध्यान दिया गया। हिंदी पुस्तकों को छापने के लिए सन् 1922 में सभा ने हिंदी प्रेस की भी स्थापना की। हिंदी प्रचार का कार्य बढता गया, तो हिंदी पढ़ानेवाले अध्यापकों की आवश्यकता बढने लगी। इस आवश्यकता की पुर्ति के लिए मद्रास, तिरुच्चि, मधुरै, विजयवाडा और कर्नाटक में भी 'हिंदी प्रचारक विद्यालय' स्थापित किये गये। सन् 1936 में दक्षिण के चारों भाषा प्रांतों (तेलुगु, तमिल, कन्नड और मलयालम) में स्वावलम्बी प्रांतीय शाखाओं की स्थापना हुई, जिनके निरीक्षण में पूरे दक्षिण में बडे उत्साह के साथ हिंदी प्रचार का कार्य आगे बढ़ा।

आंध्र प्रांत में राष्ट्रभाषा हिंदी का प्रचार :

दक्षिण में विधिवत् हिंदी प्रचार के शुरू होने के बहुत पहले ही आंध्र प्रांत में हिंदी के प्रति रुचि और प्रेम उत्पन्न हुए थे। मुसलमानी शासन जब दक्षिण में स्थापित हुआ, उसके साथ ही अरबी-पारसी मिश्रित हिंदी दक्षिण में आयी और दक्षिण की भाषाओं की खूबियों को आत्मसात् करके उसने 'दखनी' नाम पाया। यही आगे चलकर उर्दू और बाद को हिंदुस्तानी कहलायी। यही नहीं, सन् 1882-83 में धारवाड से एक फारसी नाटक कम्पनी दक्षिण भारत के आंध्र प्रांत में आयी और वहाँ के मुख्य-मुख्य स्थानों में उसने हिंदी नाटक खेले थे। जनता ने इन नाटकों का बडा आदर किया। इन नाटकों का प्रभाव यहाँ के लोगों पर इतना ज्यादा पडा था कि इस नाटक कम्पनी के अनुकरण में आंध्र के मछलीपट्टणम जैसे कई शहरों में ईमनि लक्ष्मण स्वामी जॅसे स्थानीय नाटककारों एवं कलाकारों के द्वारा हिंदी नाटक खेले गये। उनके द्वारा प्रदर्शित 'पेशवा नारायण वध', 'रामदास' आदि हिंदी नाटकों ने बडी लोकप्रियता हासिल

की थी। इन नाटकों को नादेंड्ला पुरुषोत्तम कवि ने तेलुगु लिपि में लिखकर छाप दिया था। इसप्रकार दक्षिण भारत में हिंदी प्रचार प्रारंभ होने से करीब 50 वर्ष पूर्व ही आंध्र प्रांत की जनता में हिंदी के प्रति प्रेम उत्पन्न हुआ था। इसी प्रेम ने हिंदी प्रचार के प्रयास को सहारा दिया था।

गांधीजी के राष्ट्रभाषा हिंदी प्रचार के आंदोलन ने भावुक आंध्र नवयुवकों को अपनी ओर आकर्षित किया था। सन् 1919-20 में सर्वश्री अवधनंदन, रामानंद शर्मा, हृषीकेश शर्मा, रामगोपाल शर्मा, रामभरोसे आदि उत्तर भारत से आंध्र प्रांत में हिंदी प्रचार करने के लिए आये। आंध्र प्रांत में हिंदी के प्रति बढते प्रेम को देखकर कुछ उत्साही युवकों को हिंदी की शिक्षा पाने के लिए उत्तर भारत भेजा गया, वापस आने पर उन्हें हिंदी प्रचार का काम सौंपा गया। पहले दल के श्री मल्लादि सीतारामांजनेयुलु, मछलीपट्टणम में हिंदी प्रचार का काम करने लगे। सन् 1922 में राजमहेंद्रवरम में प्रथम हिंदी प्रचारक विद्यालय प्रारंभ किया गया। सन् 1924 में विजयवाडा, गुण्टूरु, नेल्लूरु आदि कुछ शहरों के नगरपालिका स्कूलों में हिदी की पढ़ाई की व्यवस्था पहले पहल हुई। धीरे-धीरे जिला बोर्डों के स्कूलों में भी हिंदी को स्थान मिलने लगा।

दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा की गतिविधियाँ आंध्र प्रांत में पहले से ही विशेष लोकप्रिय रहीं। इन गतिविधियों का संचालन पहले रामभरोसे श्रीवास्तव और उसके बाद मोटूरि सत्यनारायण ने किया। आंध्र के हिंदी प्रेमियों की विशेष रुचि के कारण सन् 1924 में आंध्र में सभा के शाखा कार्यालय की स्थापना की गयी थी, जिसके लिए सन् 1932 में विधिवत् संचालन हेतु पीसपाटी वेंकट सुब्बाराव को नियुक्त किया गया। सन् 1933 में हरिजन यात्रा के दौरान जब गांधीजी विजयवाडा पधारे , तब दुर्गाबाई देशमुख आदि के नेतृत्व में एक प्रतिनिधि मण्डल ने उनसे विनति की कि आंध्र में हिंदी प्रचार का कार्य जिस तेजी से हो रहा है, उसे सँभालने केलिए केवल शाखा कार्यालय पर्याप्त नहीं है। आंध्र के लिए स्वतंत्र सभा की आवश्यकता है। आगे चलकर सन् 1936 में प्रांतीय सभा की स्थापना हुई। इसप्रकार दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा की प्रांतीय शाखा के रूप में 'दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, आंध्र' अस्तित्व में आया। इससे आंध्र प्रांत में हिंदी प्रचार को नई ऊर्जा मिली तथा हैदराबाद आदि स्थानों पर कई परीक्षा केंद्र खुल गये।

स्वतंत्रता पूर्व काल में आंध्र प्रांत का क्षेत्र बहुत विस्तृत था। इसका एक भाग अंग्रेज सरकार के आधीन था और दूसरा हैदराबाद रियासत के। आरंभ में आंध्र सभा का मुख्यालय विजयवाडा में स्थापित हुआ था। किन्तु आगे चलकर विस्तृत कार्यक्षेत्र को देखते हुए स्वतंत्रता के पश्चात् सन् 1956 में हैदराबाद में उसका शाखा कार्यालय खोला गया और श्री वेमूरि आंजनेय शर्मा को शाखा मंत्री नियुक्त किया गया। वर्तमान काल में खैरताबाद, हैदराबाद में

स्थित कार्यालय ही दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, आंध्र प्रांत का मुख्यालय है।

आंध्र प्रांत में हिंदी प्रचार के इतिहास पर ध्यान दिया जाये, तो पहले 17 साल हिंदी प्रचार का कार्य दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास के द्वारा संचालित हुआ था। उस कालावधि में श्री हरिहर शर्मा सभा के प्रधान मंत्री थे और श्री मोटूरि सत्यनारायण प्रचार मंत्री। पश्चात् श्री मोटूरि सभा के प्रधान मंत्री बने। मोटूरि सत्यनारायण की अद्‌भुत कार्यकुशलता ने हिंदी प्रचार को एक जन आंदोलन का रूप देकर, उसे शहरों से दूर-दूर गाँवों तक पहुँचाया और आंध्र प्रांत में देशप्रेमी व देश सेवाव्रती युवकों की एक नई पीढ़ी तैयार की। गाँव-गाँव में हिंदी प्रेमी मण्डलियाँ बनीं। स्वयंसेवक अपने घरों में हिंदी पढ़ाने लगे। लोग हिंदी पढ़ने और सीखने को राष्ट्रीय कार्य मानने लगे। इससे आंध्र के नारी समाज में जागरण पैदा हुआ। हिंदी वर्गों की सह शिक्षा ने उनमें आत्मविश्वास की वृद्धि की। स्कूली शिक्षा से वंचित अनेकों स्त्रियों और अनाथ विधवाओं के लिए हिंदी शिक्षा ने समाज सेवा का मार्ग खोला। आंध्र प्रांत में पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों ने हिंदी के प्रति अधिक रुचि दिखाई।

आंध्र सभा के हैदराबाद में स्थानांतरित होने के बाद तेलंगाना क्षेत्र में हिंदी प्रचार के कार्य में विशेष प्रगति हुई। हिंदी प्रचार के कार्य को आनेक कार्यक्रमों के माध्यम से संचालित किया गया था - इनमें 1)हिंदी महासभाएँ 2)हिंदी प्रचार सम्मेलन 3)हिंदी नाटकों के प्रदर्शन 4)हिंदी प्रेमी मण्डलियाँ 5)हिंदी प्रचार सप्ताह 6)हिंदी विद्यालय और 7)हिंदी पत्रिका प्रकाशन जैसी परिणामोन्मुखी योजनाएँ सम्मिलित हैं। इन योजनाओं के परिणामस्वरूप तेलंगाना क्षेत्र में हिंदी का तीव्रता से प्रचार प्रसार बढ़ा।

आंध्र प्रांत हिंदी प्रचार में अन्य प्रांतों की अपेक्षा सदा आगे रहा। आंध्र में कहीं भी हिंदी का विरोध नहीं है। सभी जाति, धर्म, अंचल और भाषा वाले लोगों ने यहाँ हिंदी को खुले मन से स्वीकार किया है। निष्ठावान प्रचारकों के अथक परिश्रम के कारण आजकल आंध्र प्रांत में सर्वाधिक परीक्षा केन्द्र हैं। लगभग 1500 परीक्षा केन्द्रों में हर सत्र में करीब 50,000 परीक्षार्थी विभिन्न परीक्षाओं में बैठ रहे हैं। आंध्र सभा के मुख्यालय के अलावा विजयवाडा, गुंतकल व जनगाँव में तीन शाखा कार्यालय हैं। एलूरु, विशाखपट्टणम, तिरुपति, राजमहेन्द्री, गुंटूरु व करीमनगर आदि नगरों में भी केन्द्र स्थापित किये गये। पूर्वी गोदावरी, पश्चिम गोदावरी, गुंटूरु व अनंतपुरम में सर्वाधिक परीक्षार्थी बैठ रहे हैं। आंध्र में लगभग 10,000 प्रमाणित प्रचारक हिंदी प्रचार के कार्य में लगे हुए हैं। केवल तेलंगाना क्षेत्र में 2001- 2007 की अवधि में सभा की प्रारंभिक परीक्षाओं में करीब 45,500 छात्र सम्मिलित हुए। इस क्षेत्र में आंध्र सभा के 55 परीक्षा केन्द्र सक्रिय हैं।

दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा के सुदीर्घ इतिहास और व्यापक राष्ट्र सेवा को देखते हुए

भारतीय संसद ने सन् 1964 में अधिनियम 14 के अंतर्गत इसे 'राष्ट्रीय महत्व की संस्था' घोषित किया। इससे सभा को हिंदी प्रचार की उपाधियों के अलावा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के सदृश विश्वविद्यालयीय उच्च उपाधियाँ प्रदान करने का अधिकार प्राप्त हुआ। सभा ने 'उच्च शिक्षा और शोध संस्थान' आरंभ किया। इसका मुख्यालय मद्रास में है और चारों दक्षिणात्य प्रांतों में संस्थान का एक-एक केन्द्र है। तेलंगाना में उच्च शिक्षा और शोध संस्थान का केन्द्र सन् 1978 में हैदराबाद में आरंभ हुआ। इस केन्द्र द्वारा तब से लेकर अब तक करीब 1000 छात्र एम.ए., 260 एम.फ़िल्., 50 पीएच्.डी. तथा 3 डी.लिट्. उपाधियाँ प्राप्त कर चुके हैं। इनके अलावा कई छात्र 'स्नातकोत्तर अनुवाद डिप्लोमा' और 'स्नातकोत्तर पत्रकारिता डिप्लोमा' प्राप्त कर चुके हैं। पिछले कुछ वर्षों से दूरस्थ माध्यम से भी विश्वविद्यालयीय शिक्षा की सुविधा दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा द्वारा दी जा रही है। प्रति वर्ष हैदराबाद केन्द्र में कई छात्र और शोधार्थी हिंदी में एम.ए., एम.फ़िल्., पीएच्.डी. में दाखिल हो रहे हैं। इसप्रकार दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा की आंध्र शाखा की सेवा और कार्यक्षमता अत्यंत गौरवशाली है। यह संस्था आंध्रप्रदेश सहित तेलंगाना में हिंदी के प्रचर-प्रसार में अग्रणी रही है।

इसके अतिरिक्त, केन्द्र सरकार के त्रिभाषा सूत्र के अनुसार पूरे आंध्र प्रांत में हिंदी का अध्ययन-अध्यापन द्वितीय भाषा के रूप में किया जाने लगा। पाँचवीं कक्षा से दसवीं कक्षा तक हिंदी का अध्ययन अनिवार्य है। एस्.एस.सी. सार्वजनिक परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए हिंदी में उत्तीर्ण होना अनिवार्य है। आंध्रप्रदेश और तेलंगाना राज्य सरकारें प्रति वर्ष हिंदी पंडितों के वेतन के लिए करोडों रूपये खर्च कर रही हैं। करीब 13 लाख विद्यार्थी विभिन्न कक्षाओं में हिंदी पढ रहे हैं और पाठशाला के स्तर पर हिंदी सिखाने के लिए करीब सात हजार हिंदी शिक्षक नियुक्त हुए हैं। हैदराबाद और सिकंदराबाद नगरों में दर्जनों हिंदी माध्यम के स्कूल भी हैं। आंध्रप्रदेश और तेलंगाना राज्यों के महाविद्यालयों में इंटर और स्नातक की शिक्षा लेनेवाले छात्रों को अपनी मर्जी से द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी लेने की सुविधा प्राप्त है। कुछ इने-गिने महाविद्यालयों में बी.ए. में विशेष विषय के रुप में हिंदी पढ़ने की भी सुविधा उपलब्ध है।

आंध्रप्रदेश और तेलंगाना में स्थित विश्वविद्यालयों में हिंदी में स्नातकोत्तर शिक्षा प्राप्त करने और उसके उपरांत शोध कार्य करने की व्यवस्था उपलब्ध है। उस्मानिया विश्वविद्यालय,हैदराबाद; केन्द्रीय विश्वविद्यालय, हैदराबाद; काकतीय विश्वविद्यालय, वरंगल; आंध्र विश्वविद्यलय, विशाखपट्टणम; श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, तिरुपति; आचार्य नागार्जुन विश्वविद्यालय, गुंटूरु आदि में हिंदी विभाग चालू हैं। इन विभागों में हर वर्ष सैकडों विद्यार्थी हिंदी भाषा एवं साहित्य का गहन अध्ययन कर रहे हैं। कितने ही शोधार्थी हिंदी साहित्य के विभिन्न विषयों पर शोध कार्य कर रहे हैं।

इसप्रकार हिंदी के प्रचार-प्रसार, अध्ययन-अध्यापन के क्षेत्र में आंध्रप्रदेश आरंभ से ही अग्रणी रहा। पूज्य बापूजी ने राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी के प्रचार की जो प्रेरणा प्रदान की थी, उसका प्रभाव तेलुगु भाषी लोगों के मनों को सदा उत्तेजित करता रहा। आज भी आंध्रप्रदेश और तेलंगाना राज्यों के लोग हिंदी के प्रति उतने ही आकृष्ट हैं, जितना पहले हुए थे। फ़लतः तेलुगु भाषी हिंदी समझने-बोलने में अपनी योग्यता का परिचय दे रहे हैं। वे हिंदी भाषा और साहित्य के अध्ययन में ही नहीं, शोध कार्य, अनुवाद और साहित्य सृजन में उत्तर भारतवासियों की बराबरी कर रहे हैं। यही आंध्र प्रांत में हिंदी प्रचार की सफ़लता का प्रमाण है।

हिंदी साहित्य को तेलुगु भाषा-भाषियों का योगदान :

तेलुगु भाषा-भाषी हिंदी के अनन्य प्रेमी हैं। हिंदी भाषा और साहित्य के विस्तार एवं विकास में उनका योगदान अनुपम है। उनमें कुछ लोगों ने हिंदी साहित्य को प्रभावित किया था, तो और कुछ ने हिंदी साहित्य सृजन में अपनी प्रतिभा का परिचय देकर, उसके विकास के लिए प्रयास किया। आज भी कई लोग हिंदी साहित्य की सेवा के पवित्र कार्य में तन-मन से लगे हुए हैं।

तेलुगु भाषियों और हिंदी का संबंध बहुत पुराना है। मध्य युग से लेकर तेलुगु भाषी आज तक हिंदी की सेवा अविराम करते आ रहे हैं। कृष्ण भक्ति साहित्य के प्रचार में पुष्टिमार्ग का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। पुष्टिमार्ग के प्रवर्तक महाप्रभु वल्लभाचार्य तेलुगु मूल के थे, जिनके परिवार ने आंध्र की गोदावरी तट से यमुना तट की ओर प्रस्थान किया था। तेलुगु मूल के वल्लभाचार्य ने हिंदी साहित्याकाश के सूर्य सदृश सूरदास को कृष्णभक्ति की ओर प्रेरित किया था। यही नहीं, हिंदी में कृष्ण भक्ति के विकास में प्रमुख भूमिका निभानेवाले अष्टछाप कवि वल्लभाचार्य तथा उनके पुत्र विट्ठलनाथ जी के ही शिष्य थे। एक तेलुगु मूल के आचार्य ने हिंदी साहित्य के स्वर्णयुग मानेजानेवाले भक्तिकाल की एक प्रमुख भक्तिधारा के साहित्य को बहुत प्रभावित किया था।

'गाथासप्तशति' के सर्जक हाल शातवाहन तेलुगु भाषी ही थे, जिनकी इस रचना ने हिंदी में 'सतसई' परंपरा की नींव डाली थी। हाल शातवाहन की इस रचना ने ही रीतिकाल के प्रसिद्ध एवं प्रतिनिधि कवि बिहारीलाल को 'बिहारी सतसई' लिखने की प्रेरणा प्रदान की। रीतिकाल के और एक प्रसिद्ध कवि पद्माकर भट्ट को ब्रज भाषा पर असाधारण अधिकार प्राप्त था। वे तेलुगु भाषी ही थे। उन्होंने 'हिम्मत बहादुर बिरुदावली', 'जगद्विनोद', 'पद्माभरण', 'जयसिंह बिरुदावली', 'हितोपदेश', 'राम रसायन', 'प्रबोध पचासा', 'गंगा लहरें' आदि काव्यों की रचना की थी। हिंदी साहित्य के विकास में तेलुगु मूल के पद्माकर भट्ट का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। उपर्युक्त तेलुगु भाषी हिंदी कवियों की सृजन परंपरा को अगली पीढ़ियों के

(आंध्र के) हिंदी कवियों ने आगे बढ़ाया।

आधुनिक काल के भारतेन्दु युग में आंध्र प्रांत के श्री नादेंड्ला पुरुषोत्तम कवि ने सन् 1880 के आसपास हिंदी में 32 नाटकों की रचना की। हिंदी साहित्य की सेवा में यह एक अभूतपूर्व विषय है। क्योंकि तब तक आंध्र प्रांत में विधिवत हिंदी प्रचार का कार्य शुरू भी नहीं हुआ था। इन नाटकों का आंध्र के कई शहरों में मंचन भी हुआ था। हिंदी क्षेत्र में भी अभी-अभी नाटक लिखे जाने लगे थे। मछलीपट्टणम के हिंदू थिएटर के लिए पुरुषोत्तम कवि तेलुगु की लिपि में हिंदी नाटक लिखा करते थे।

जब दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा के प्रांतीय कार्यालय की स्थापना आंध्र के प्रमुख नगर विजयवाडा में हुई थी, तब से सैकडों-हजारों हिंदी प्रेमी हिंदी प्रचार के कार्य में लग गये। बडी संख्या में स्त्री-पुरुष, बाल-वृद्ध राष्ट्रभाषा हिंदी की ओर आकृष्ट हुए, हिंदी सीख ली। उनमें से कितने ही लोगों ने हिंदी भाषा में दक्षता प्राप्त की, उसके साहित्य का भी गहरा अध्ययन किया था। ऐसे लोगों ने हिंदी की विभिन्न विधाओं में लिखकर अपनी लेखन-प्रतिभा का परिचय दिया था। इससे आंध्रों के हाथों हिंदी में महत्वपूर्ण ग्रंथ सृजित हुए।

महावीर प्रसाद द्विवेदी के समकालीन तेलुगु भाषी श्री जंध्याला शिवन्ना शास्त्री ने हिंदी की प्रसिद्ध पत्रिका 'सरस्वती' में प्रकाशनार्थ कई लेख लिखे। 'खडीबोली' को मानक हिंदी का रूप देने के विचार चलते समय, उसके स्वरूप-स्वभाव के संबंध में वे पंडित महावीरप्रसाद द्विवेदी से परामर्श भी करते थे। तर्क, व्याकरण एवं साहित्य शास्त्र के विद्वान शास्त्री जी ने पहले पहल 'तेलुगु - हिंदी कोश', 'हिंदी - तेलुगु कोश' का निर्माण किया था। 'हिंदी - तेलुगु व्याकरण', 'ब्रज भाषा व्याकरण' भी लिखा। श्री वेंकटेश्वर शर्मा ने भी 'हिंदी - तेलुगु कोश' बनाया तथा 'आध्यात्मयोग', 'चित्त विकलन' नामक ग्रंथ भी लिखे। कोश-निर्माताओं में श्री अयाचितुला हनुमच्छास्त्री तथा श्री कामाक्षीराव प्रमुख हैं। दक्षिण भारत में हिंदी प्रचार के दिग्गज श्री मोटूरि सत्यनारायण ने 'विश्व हिंदी कोश' का संपादन किया।

तेलुगु भाषा-भाषियों का हिंदी काव्य सृजन :

आधुनिक काल में कई प्रतिभाशाली तेलुगु भाषी कवियों ने हिंदी में कविता लिखकर अपनी काव्य-प्रतिभा प्रकट की। आंध्र के हिंदी कवियों में अत्यंत वरिष्ठ और लब्ध प्रतिष्ठ कवि श्री लाजपति पिंगल हैं। उन्होंने सन् 1929 में ब्रज भाषा में 'भक्त रामदास' नामक प्रबंध काव्य की रचना की। बाद में उसी को उन्होंने खडीबोली में भी लिखा था। इस काव्य में लाजपति ने अनन्य रामभक्त (कंचर्ला गोपन्ना) रामदास की जीवनी एवं उनकी अद्वितीय रामभक्ति का अद्‌भुत चित्रण किया था। इसमें कवि की कल्पनाशीलता के मृदु एवं मनोहर उद्‌गार के दर्शन होते हैं।

श्री कर्ण वीरनागेश्वरराव ने 'दलितों की विनती' नामक काव्य दोहा छंद में लिखा। इसमें कवि ने सामाजिक विषमताओं तथा जाति-भेद का जोरदार खण्डन किया। यह काव्य आंध्र के हिंदी कवियों के प्रगतिशील विचारों को स्पष्ट करता है। आंध्र के और एक हिंदी कवि श्री बी.बालकृष्णाराव ने 'कौमुदी', 'रातबीती', हमारी राह', 'अर्ध शती' आदि काव्यों की रचना की। श्री वारणासी राममूर्ति 'रेणु' ने सामाजिक कुरीतियों की भर्त्सना करते हुए 'विहग' नामक काव्य-संग्रह प्रकाशित किया। 'गीत विहार' काव्य-संग्रह में 'रेणु' जी ने प्रकृति-सौंदर्य और देशप्रेम की सुंदर अभिव्यक्ति दी।

कल्पना की सुंदर अभिव्यक्ति में अत्यंत प्रसिद्ध आंध्र के हिंदी कवि आलूरि बैरागी अमूर्त को मूर्त रूप देने में प्रवीण हैं। वे जड व कुरूप वस्तुओं को भी अपनी कल्पना-क्षमता से जीवंत बनाने की प्रतिभा रखते हैं। उनका प्रसिद्ध काव्य-संग्रह 'पलायन' सन् 1951 में प्रकाशित हुआ। उनकी एक अन्य रचना 'फ़टा दर्पण' है। इनमें बैरागी की प्रौढ़ता की खूब प्रशंसा हुई। बैरागी ने 'तेलुगु की आधुनिक कविता' शीर्षक से तेलुगु के प्रसिद्ध कवियों की कविताओं का काव्यानुवाद प्रस्तुत किया।

आंध्र के हिंदी कवियों में मृदु भावों के प्रसिद्ध कवि आचार्य पी.आदेश्वरराव का काव्य-संग्रह 'अंतराल' कवि की अद्‌भुत प्रणय भावनाओं को प्रकट करता है। यह ग्रंथ हिंदी काव्य-प्रेमियों की प्रशंसा प्राप्त कर सका। इस काव्य सृजन के साथ आचार्य आदेश्वरराव ने हिंदी क्षेत्र के छायावादी कवियों के समकक्ष का स्थान प्राप्त कर लिया था।

इसी क्रम में श्री बूदराजु वेंकट सुब्बाराव के 'भारतश्री', रेशमी कुर्ता', 'मृणालिनी' और 'हंपी के खण्डहर' आदि काव्य; श्री सूर्यनारायण भानु का 'रूप राग'; श्री इलपावुलूरि पाण्डुरंगाराव का 'कामाक्षी विलास'; श्री चावली सूर्यनारायण का 'सती ऊर्मिला'; श्री अन्नपरेड्डी श्रीराम रेड्डी का 'सुमन मन'; श्री पुल्लय्या राव का 'स्वर्ण पथ'; श्री काजा वेंकटेश्वरराव का 'अंतःस्थल'; श्री नरेन्द्रराय के 'अंधेरे के खिलाफ़', 'कुहासे की धूप' और 'एहसासों के साये'; श्री वेणुगोपाल का 'वे हाथ होते हैं'; आचार्य रोहिताश्व का 'शब्द दोगले नहीं होते' आदि आंध्रप्रदेश और वर्तमान तेलंगाना के हिंदी कवियों की काव्य-प्रतिभा को प्रकट करने वाले सिद्ध हुए।

तेलुगु भाषी हिंदी कवियों के इन प्रयासों से हिंदी काव्य बहुत समृद्ध हुआ है। यह समृद्धि वस्तु और शिल्प दोनों में देखी जा सकती है। यह हिंदी को आंध्रप्रदेश और तेलंगाना के कवियों की अनुपम देन है। प्रचार से दूर, ये तेलुगु भाषी हिंदी कवि विशिष्ट गौरव के अधिकारी हैं।

गद्य साहित्य के सृजन में तेलुगु भाषी हिंदी लेखकों का योगदान :

तेलुगु भाषी साहित्यकारों ने हिंदी गद्य की लगभग सभी विधाओं में महत्वपूर्ण रचनाएँ

करके उत्तर भारत के हिंदी लेखकों के समकक्ष का स्थान ग्रहण किया। इन्होंने हिंदी में उपन्यास, कहानी, नाटक, आलोचना के साथ-साथ शोध ग्रंथों के लेखन में भी अपनी पहचान बना ली। तुलनात्मक अध्ययन में तेलुगु भाषी हिंदी लेखक बहुत आगे हैं।

उपन्यास : तेलुगु भाषी हिंदी उपन्यासकारों में श्री आरिगपूडि रमेश चौदरी बहुत प्रसिद्ध हैं। उन्होंने अपने उपन्यासों में दक्षिण भारत की संस्कृति और जनजीवन का अत्यंत सहज चित्रण किया था। मानव जीवन की अनेकानेक समस्याएँ और उनके समाधान उनके उपन्यासों में देखे जा सकते हैं। चौदरी जी ने कुल 25 उपन्यास लिखे। 'भूले भटके', 'अपनी करनी', 'दूर के ढ़ोल', 'खरे खोटे', 'धन्यभिक्षु', 'आदरणीय', 'अपने पराये', 'पतितपावनी', 'अपवाद', 'मुद्राहीन', 'यह भी होता है', 'सांठ गांठ', 'सारा संसार मेरा', 'झाडफ़ानूस', 'निर्लज्ज', 'उल्टी गंगा', 'चरित्रवान', 'उधार के पंख', 'नदी का शोर', 'छोटे-बडे लोग', 'चमत्कार', 'अभिशाप', 'सब स्वार्थी हैं', 'सरला', 'अंतिम उपाय' आदि चौदरी के उपन्यास हैं। उन्होंने तेलुगु भाषी हिंदी लेखकों की हिंदी भाषा क्षमता तथा सृजन कौशल का स्वाद उत्तर भरत के लेखकों व पाठकों को चखा दिया। चौदरी जी हिंदी जगत की प्रशंसा प्राप्त ऊँचे दर्जे के उपन्यासकार हैं।

तेलुगु भाषी हिंदी उपन्यसकारों में डॉ.बालशौरी रेड्डी बडे सक्षम हैं। रेड्डी जी ने पौराणिक, ऐतिहासिक तथा सामाजिक उपन्यासों की रचना की। 'शबरी' उनका पौराणिक उपन्यास है, जिसमें शबरी के माध्यम से स्त्री के आदर्श एवं त्यागपूर्ण जीवन का चित्रण किया। 'लकुमा', और 'दावानल', 'प्रकाश और परछाई' उनके ऐतिहासिक नाटक हैं, जिनमें क्रमशः स्त्री के अद्‌भुत त्याग तथा 'पलनाटि युद्ध' के लिए उत्तरदायी परिस्थितियाँ तथा मध्ययुगीन जीवन मूल्यों पर प्रकाश डाला गया है। 'जिंदगी की राह', भग्न सीमाएँ', 'बैरिष्टर', 'स्वप्न और सत्य', 'धरती मेरी माँ', 'प्रोफ़ेसर' आदि सामाजिक उपन्यासों में मध्यवर्गीय जीवन, महानगरीय वातावरण, प्रेम और विवाह, विश्वचेतना, पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव आदि विषयों से जुडी हुई समस्याओं को उठाया गया है। रेड्डी जी बहुमुखी प्रतिभासंपन्न हिंदी साहित्यकार के रूप में जाने जाते हैं।

उपर्युक्त दो उपन्यासकारों के अलावा कई तेलुगु भाषी हिंदी लेखकों ने जीवन के अनेक पहलुओं पर उपन्यास लिखे। श्री दण्डमूडि वेंकट कृष्णाराव ने 'शककर्ता शालिवाहन', और 'चित्रांगि' नामक ऐतिहासिक उपन्यास लिखे। तेलंगाना के श्री किशोरीलाल व्यास ने 'रजाकार' और 'नया सवेरा' उपन्यास लिखे। श्रीमती विनोदिनी गोयन्का ने 'देश-विदेश' नामक उपन्यास लिखा। आचार्य रेगुलपाटि माधवराव ने 'साक्षी' नामक उपन्यास लिखा। डॉ.के.मल्लिकार्जुन ने आंध्र के इतिहास के पलनाडु युद्ध के आधार पर 'प्रतिशोध' नामक आँचलिक उपन्यास लिखा। श्री वाई.सी.पी.वेंकट रेड्डी ने 'निर्णय' नामक उपन्यास लिखा। श्री बूदराजु वेंकट सुब्बाराव ने

'उफ़ान' नामक उपन्यास लिखा। यार्लगड्डा लक्ष्मीप्रसाद ने ऐतिहासिक पात्रों को मानवीय धरातल पर उतारकर उनके चारित्रिक वैशिष्ट्य को रेखांकित करते हुए 'द्रौपदी' और 'सत्यभामा' शीर्षक दो उपन्यास लिखे, जो साहित्य जगत में बहुत चर्चित हुए।

कहानी : तेलुगु भाषी साहित्यकार हिंदी कहानी लेखन में भी आगे हैं। बहुमुखी प्रतिभासंपन्न साहित्यकार श्री आरिगपूडि रमेश चौदरी ने एक सौ से ज्यादा कहानियों की रचना की, जो 8 संग्रहों में संकलित हैं। 'भगवान भला करे', 'जीने की सजा', 'बंद आँखें', 'विचित्र निधन', 'एक पहिये की गाडी', 'कलापोषक', 'उलझे संबंध', 'मय सूद के' आदि कहानी-संग्रहों में संकलित उनकी कहानियाँ मानव जीवन की अनेक पहलुओं को छूती हैं। वे समकालीन समाज की सभी समस्याओं पर प्रकाष डालती हैं। विशेषकर उनकी कहानियों में आंध्र प्रांत की जीवनी तथा संस्कृति जीवंत हो उठती हैं।

हिंदी कहानी को श्री बालशौरी रेड्डी जी की भी महत्वपूर्ण देन है। उन्होंने 'बैसखी' नामक कहानी संग्रह में 17 कहानियाँ संकलित कीं। इन कहानियों में रेड्डी जी ने भारतीय सामाजिक व्यवस्था की कमियाँ, शासन में व्याप्त भ्रष्टाचार, स्त्रियों के प्रति अनुचित व्यवहार, मद्यवर्गीय मनोवृत्तियाँ, दहेज प्रथा के दुष्परिणाम, बिगडते हुए पारिवारिक संबंध आदि पर प्रकाश डाला। इनके अतिरिक्त रेड्डी जी ने 'न्याय की कहानियाँ', 'मर्यादा राम', 'मरा हुआ हाथी', 'सोने की अंगूठी', 'अनोखी छडी', 'किफ़ायती', 'चोर की दाडी में तिनका', 'बदला', 'शरत नामा' नाम से दर्जनों-बीसों बाल कहानियाँ लिखीं। बच्चों में विवेक , तर्क बुद्धि, समझदारी बढ़ाने के ध्येय से उन्होंने 'तेलुगु की लोककथाएँ', 'आंध्र के महापुरुष', 'सत्य की खोज', 'तेनाली राम की लतीफ़ें', 'बुद्धि से बुद्धिमान', 'आदर्श जीवनियाँ', 'दक्षिण की लोककथाएँ' आदि संग्रहों में अनेक बाल-कहानियाँ भी लिखीं।

श्री दण्डमूडि महीधर ने 'यूकलिप्टस की डाली में आधा चाँद' नामक संग्रह में 7 कहानियाँ प्रकाशित कीं। डॉ.अहिल्या मिश्र ने 'फ़ाँसी की काई' नामक संग्रह में 17 कहानियाँ प्रकाशित कीं। आचार्य रोहिताश्व ने 'अस्तित्व' नामक संग्रह में बहुमूल्य कहानियाँ संकलित कीं। श्री वाई.सी.पी.वेंकट रेड्डी ने वैविध्यपूर्ण सामाजिक पहलुओं को लेकर 17 कहानियाँ लिखकर प्रकाशित कीं।

नाटक : तेलुगु भाषी हिंदी लेखक, नाटक रचना में भी बहुत सिद्धहस्त हैं। श्री चोडवरपु रामशेषय्या ने 'बोब्बिलि युद्ध', 'गृहिणी' और 'मंत्री रामय्या' शीर्षक नाटक लिखे। श्री आरिगपूडि रमेश चौदरी ने 'कोई न पराया' नामक सामाजिक नाटक लिखा। 'नेपथ्य' शीर्षक से एकांकी-संग्रह प्रकाशित किया। आकाशवाणी, हवामहल में प्रसारणार्थ लिखे 14 एकांकियों का संग्रह 'बिजली और बारिश' नाम से प्रकाशित हुआ। चौदरी जी का प्रसिद्ध एकांकी 'भाईचारा'

कई कॉलेजों में प्रदर्शित हुआ। श्री चलसानि सुब्बाराव ने 'रानी मल्लम्मा' नामक नाटक लिखा। श्री कर्ण राजशेषगिरि राव ने 'भौरों का पहाड' नामक नाटक लिखा। श्री चावलि सूर्यनारायण मूर्ति ने 'महानाश की ओर' नामक नाटक लिखा। इन नाटकों के द्वारा नाटककारों ने मनोरंजन के साथ-साथ सामाजिक चेतना लाने का भरसक प्रयास किया।

व्यंग्य, निबंध और आलोचना : उपर्युक्त विधाओं के अतिरिक्त तेलुगु भाषी हिंदी लेखकों ने व्यंग्य-रचना, निबंध-लेखन, आलोचना, शोध आदि क्षेत्रों में भी अपनी दक्षता प्रदर्शित की। व्यंग्य के क्षेत्र में श्री रवि श्रीवास्तव, श्री मटमरि उपेन्द्र और श्री भगवानदास जोपट प्रमुख हैं। निबंध,आलोचना तथा शोध के क्षेत्र में डॉ.नरसिंहाचारी, वेमूरि आंजनेय शर्मा, वेमूरि राधाकृष्ण मूर्ति, दण्डमूडि महीधर, आचर्य सुंदर रेड्डी, आचार्य पी.आदेश्वरराव, आचार्य एस.माधवराव, डॉ.मोहन सिंह, आचार्य वै.वेंकटरमण राव, आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी, आचार्य एस.एम.इकबाल, आचार्य के.लीलावति, आचार्य एस.शेषारत्नम, आचार्य के.सीतालक्ष्मी, आचार्य एस.सर्राजु, आचार्य एस.ए.एस.एन.वर्मा, प्रो.एम.वेंकटेश्वर, डॉ.बी.सत्यनारायण, डॉ.पी.माणिक्यांबा, डॉ.पोलि विजयराघव रेड्डी आदि प्रमुख हैं, जिन्होंने अपनी वैचारिक एवं आलोचनात्मक रचनाओं का प्रणयन किया।

आंध्रप्रदेश और तेलंगाना के सभी विश्वविद्यालयों में, जहाँ-जहाँ हिंदी विभाग हैं, दशाब्दियों से हिंदी में शोधकार्य चल रहा है। प्रतिभाशाली एवं अनुभवी आचार्यों के मार्गदर्शन में हिंदी की सभी विधाओं, साहित्यिक आंदोलनों, प्रवृत्तियों तथा प्रसिद्ध कृतियों पर सैकडों प्रामाणिक शोध प्रबंध रचे गये हैं। यू.जी.सी. की परियोजनाओं तथा फ़ेलोशिप से अब हिंदी साहित्य और तुलनात्मक अध्ययन पर बडी मात्रा में शोध कार्य चल रहे हैं।

अनुवाद के माध्यम से हिंदी-तेलुगु साहित्य के बीच आदान-प्रदान : तेलुगु भाषी अपनी अनुवाद प्रतिभा के लिए देश भर में जाने-पहचाने जाते हैं। विधिवत राष्ट्रभाषा हिंदी सीखने, उसमें दक्षता प्राप्त करने के साथ ही इन्होंने हिंदी की प्रसिद्ध रचनाओं को तेलुगु में अनूदित करना शुरू कर दिया था। इसी क्रम में तुलसी, सूर, प्रेमचंद, प्रसाद, माखनलाल चतुर्वेदी, निराला आदि प्रसिद्ध साहित्यकारों की प्रमुख रचनाओं का तेलुगु में अनूदित करके, हिंदी साहित्य की महानता आंध्र के लोगों के समक्ष रखने का सफ़ल प्रयास किया गया। परिणामस्वरूप प्रेमचंद की कहानियों और उपन्यासों से तेलुगु प्रजा भलीभाँति परिचित हो गयी। इसी तरह अपनी मातृभाषा तेलुगु के प्राचीन व आधुनिक साहित्य को अनुवाद के द्वारा हिंदी भाषी लोगों के यहाँ पहुँचाने का भी प्रयास किया। हिंदी से तेलुगु तथा तेलुगु से हिंदी के अनुवाद में आंध्र के अनुवादकों ने अपनी अद्‌भुत प्रतिभा दिखाई। इसप्रकार दोनों भाषाओं के साहित्यों के बीच आदान-प्रदान बहुत हुआ है। मुख्य रूप से, तेलुगु साहित्य की महत्ता देशव्यापी

बन गयी।

पोतना के 'भागवतम्' का वारणासी राममूर्ति रेणु ने हिंदी में 'आंध्र भागवत परिमल' नाम से काव्यानुवाद किया। उसी ग्रंथ के चार प्रसंगों को आचार्य पी.आदेश्वरराव ने 'चतुष्पद' नाम से अनुवाद किया। उसी के 5 और 6 स्कंधों को डॉ.एम.रंगय्या ने 'पोतना कृत' नाम से लिप्यंतरण के साथ हिंदी में अनुवाद किया। तेलुगु में गोना बुद्धारेड्डी कृत 'रंगनाथ रामारण' का अनुवाद के.सी.कामाक्षीराव ने हिंदी में किया। उसीका गद्यानुवाद भीमसेन निर्मल ने भी किया। अन्नमाचार्य के पदों का अनुवाद डॉ.सी.एच.रामुलु ने 'अन्नमाचार्य के संकीर्तन' नाम से किया। भक्त त्यागराज की कृतियों का हिंदी अनुवाद इलपावुलूरि पाण्डुरंगाराव ने किया। श्रीकृष्णदेवराय के दरबारी कवि पेद्दना के 'मनुचरित्र' का हिंदी अनुवाद 'प्रवर' के नाम से वड्डिपर्ति चलपतिराव ने किया। श्रीकृष्णदेवराय के तेलुगु प्रबंध 'आमुक्तमाल्यदा' का अनुवाद पोत्तूरु नारायणप्पा चौदरी ने किया।

शतक साहित्य की तेलुगु में विशिष्ट परंपरा है। नीति और भक्ति शतक बहुत लोकप्रिय हुए हैं। 'सुमती शतक' का हिंदी अनुवाद सुंकरा चेंगय्या ने दोहा छंद में 'सुमति की सूक्तियाँ' नाम से किया। 'वेमना शतक' का हिंदी अनुवाद दुव्वूरि रामकृष्णमूर्ति, डॉ.सूर्यनारायण भानु, रेगुलपाटि माधवराव, चलसानि सुब्बाराव, वेमूरि राधाकृष्णमूर्ति और एम.बी.वी.आर.आर. शर्मा आदि ने किया। इन रचनाओं का अनुवाद करके तेलुगु के अनुवादकों ने तेलुगु के प्राचीन साहित्य के वैभव को देश के समक्ष लाने का सफ़ल प्रयास किया।

ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त तेलुगु कवि डॉ.सी.नारायण रेड्डी के काव्य 'विश्वंभरा' का हिंदी अनुवाद भीमसेन निर्मल ने किया। रेड्डी जी के 'मट्टि, मनिषि, आकाशम्' का अनुवाद पी.आदेश्वरराव ने किया। रायप्रोलु सुब्बाराव के काव्य 'तृणकंकणम्' का अनुवाद रेपाटि शंकरय्या ने किया। गुरजाडा अप्पाराव की कविताओं का तथा पुरिपण्डा अप्पला स्वामी के काव्य 'सौदामिनि' का अनुवाद और सूर्यनारायण भानु ने किया। आलूरी बैरागी की कुछ कविताओं का अनुवाद यार्लगड्डा लक्ष्मीप्रसाद ने 'तेलुगु के आधुनिक कवि बैरागी की प्रतिनिधि कविताएँ' नाम से किया। गुर्रम जाषुवा के 'फ़िरदौसी' काव्य का अनुवाद दुर्गानंद ने तथा 'गब्बिलम्' का वारणासी राममूर्ति रेणु ने किया। मधुनापंतुला सत्यनारायण शास्त्री के काव्य 'आंध्र पुराणम्' का अनुवाद चेबोलु शेषगिरिराव ने किया। कुंदुर्ति आंजनेयुलु की कविताओं का अनुवाद निर्मलानंद और कामताप्रसाद ओझा ने मिलकर किया। आरुद्रा की कविताओं का अनुवाद भीमसेन निर्मल ने किया। श्री श्री की कविताओं का अनुवाद सूर्यनारायण भानु ने, और कुछ कविताओं का अनुवाद निर्मलानंद तथा कामताप्रसाद ओझा ने 'आग उगलता हुआ आसमान की ओर बढ़ता हुआ' शीर्षक से किया। उन्हीं के प्रमुख कविता-संग्रह 'महाप्रस्थानम्'

का अनुवाद निर्मलानंद ने किया। गुंटूरु शेषेंद्र शर्मा के पद्य काव्य 'नेनु, ना देशम्, ना प्रजलु' का अनुवाद 'मेरी धरती, मेरे लोग' शीर्षक से, 'मंडे सूर्युडु' का 'धधकता सूरज' नाम से तथा गोर्रिल्ला' का अनुवाद 'गुर्रिल्ला' शीर्षक से ओमप्रकाश निर्मल ने हिंदी में किया। बेजवाडा गोपाल रेड्डी के पद्यों का अनुवाद 'मुक्तक संग्रह' के नाम से यार्लगड्डा लक्ष्मीप्रसाद ने किया। लगभग 100 समकालीन तेलुगु मुक्तछंद कविताओं का हिंदी में अनुवाद करके, डॉ.वेन्ना वल्लभराव ने '21वीं शताब्दी की तेलुगु कविता' शीर्षक से प्रकाशित किया।

तेलुगु के प्रमुख कहानीकार गोपीचंद के कहानी संग्रह 'तंड्रुलु-कोडुकुलु' का हिंदी अनुवाद 'बाप-बेटे' नाम से वेन्ना वल्लभराव ने किया। ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त कहानीकार श्री रावूरि भरद्वाज की कहानियों का अनुवाद भीमसेन निर्मल ने किया। कालीपट्नम रामाराव के कहानी संग्रह 'यज्ञम्' का अनुवाद दण्डमूडि महीधर ने किया। बलिवाडा कांताराव की कहानियों का अनुवाद जे.एल.रेड्डी ने और इल्लंदुला सरस्वती की कहानियों का अनुवाद भीमसेन निर्मल ने किया। के.सदाशिवराव के कहानी-संग्रह 'क्रास रोड्स' का अनुवाद आर.एस.सर्राजु ने किया। इनके अतिरिक्त सैकडों तेलुगु कहानियों का अनुवाद समय-समय पर हिंदी में किया गया और वे हिंदी की प्रसिद्ध पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित भी हुईं। उनकी कोई गिनती भी नहीं।

तेलुगु के कई उपन्यासों का भी हिंदी में अनुवाद किया गया है। त्रिपुरनेनि रामस्वामी चौदरी के एक उपन्यास का हिंदी अनुवाद पी.आदेश्वरराव ने 'मोहभंग' नाम से किया। नोरि नरसिंह शास्त्री के दो उपन्यासों का अनुवाद बालशौरी रेड्डी ने 'रुद्रमदेवी' और 'नारायण भट्ट' नाम से किया। अडिवि बापिराजु के 'नारायणराव' उपन्यास का अनुवाद आरिगपूडि रमेश चौदरी ने किया। कंदुकूरि वीरेशलिंगम् के उपन्यासों का अनुवाद बालशौरी रेड्डी ने 'राजशेखर चरित' और 'चंद्रगुप्त का स्वप्न' नाम से किया। मोक्कपाटि नरसिंह शास्त्री के प्रसिद्ध उपन्यास 'बारिस्टर पार्वतीशम्' का अनुवाद एम.बी.वी.आर.आर. शर्मा ने किया। गोपीचंद के प्रमुख उपन्यास 'असमर्थुनि जीवयात्रा' का अनुवाद के.रामानायुडु ने किया। उन्हीं के और एक उपन्यास 'पंडित परमेश्वर शास्त्री वीलुनामा' का अनुवाद पी.आदेश्वरराव ने किया। ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त कवि विश्वनाथ सत्यनारायण के प्रसिद्ध उपन्यास 'वेयि पडगलु' का अनुवाद पूर्व प्रधान मंत्री पी.वी.नरसिंहाराव ने 'सहस्र फण' नाम से किया। राचकोण्डा विश्वनाथ शास्त्री के उपन्यास का 'अल्पजीवि' के नाम से बालशौरी रेड्डी ने अनुवाद किया। रावूरि भरद्वाज के एक उपन्यास को दण्डमूडि महीधर ने 'सशेष' के नाम से और दूसरे उपन्यास को 'जीवन का समर' नाम से एस.शेषारत्नम ने तर्जुमा किया। वासिरेड्डी सीतादेवी के एक उपन्यास का अनुवाद बी.दयावंती ने 'समता' नाम से, दूसरे का विजय राघव रेड्डी ने 'मरीचिका' नाम से, एक अन्य उपन्यास का जे.एन.रेड्डी ने 'मिट्टी का आदमी' नाम से किया। एन.जी.रंगा के उपन्यास का

अनुवाद 'हरिजन नेता' नाम से वी.दमयंती ने किया। मुदिगोण्डा शिवप्रसाद के उपन्यास का अनुवाद 'रेसिडेन्सी' के नाम से शकील अहमद ने किया। पोलवरपु कोटेश्वरराव के उपन्यास 'चिनबाबु' का अनुवाद वेन्ना वल्लभराव ने 'छोटे कुमार' नाम से किया। सलीम के उपन्यास का अनुवाद शांता सुंदरी ने 'नई इमारत के खण्डहर' नाम से किया। अंपशय्या नवीन के उपन्यास 'अंपशय्या' का अनुवाद के.लीलावती ने 'शरशय्या' शीर्षक से किया। सी.नरसिंहाराव के उपन्यास का अनुवाद यार्लगड्डा लक्ष्मीप्रसाद ने 'आत्महत्या' नाम से किया। इनके अतिरिक्त बीसों-पच्चीसों तेलुगु उपन्यासों के अनुवाद हिंदी में किये गये हैं और ये सब अनुवाद तेलुगु लेखकों की अनुवाद दक्षता को प्रकट करते हैं।

उपर्युक्त विधाओं की तेलुगु रचनाओं के साथ-साथ नाटक, निबंध, जीवनी, आत्मकथा, आलोचना, शोध, संपादकीय, व्यक्तित्व विकास तथा वास्तु संबंधी विषयों पर लिखी गयी उत्तम रचनाओं का अनुवाद तेलुगु भाषी अनुवादकों ने हिंदी में किया। इन रचनाओं ने तेलुगु साहित्य के वैविध्य तथा वैशिष्ट्य का परिचय हिंदी संसार को दिया।

आंध्र और तेलंगाना में हिंदी साहित्य के विकास में 'आंध्रप्रदेश हिंदी अकादमी' का योगदान :

आंध्र तथा तेलंगाना क्षेत्रों में हिंदी भाषा के प्रसार एवं साहित्य के विकास में आंध्रप्रदेश हिंदी अकादमी का महत्वपूर्ण योगदान रहा। सन् 2013 तक वर्तमान तेलंगाना राज्य आंध्रप्रदेश राज्य का ही अंतर्भाग बनकर रहा था। राज्य में हिंदी प्रचार-प्रसार एवं हिंदी साहित्य को प्रोत्साहित करने के ध्येय से सन् 1982 में 'आंध्रप्रदेश हिंदी अकादमी की स्थापना हैदराबाद में हुई। देश की राजभाषा और संपर्क भाषा हिंदी के माध्यम से तेलुगु साहित्य तथा संस्कृति को परिव्याप्त करने का आशय भी इस अकादमी की स्थापना के पीछे था।

अकादमी शुरू से राज्य में हिंदी कवियों, लेखकों और अनुवादकों को हिंदी में साहित्य सृजन एवं अनुवाद के कार्य करने को प्रोत्साहित करती आयी। श्रीमती राजकुमारी इंदिरादेवी जी धनराजगीर, श्री वेमूरि राधाकृष्ण मूर्ति, प्रो.जी.सुंदर रेड्डी, डॉ.बालशौरी रेड्डी तथा डॉ.पोलि विजयराघव रेड्डी ने सन् 1982 से सन् 2000 तक अकादमी की अध्यक्षता सँभाली। राज्य सरकार से प्राप्त सीमित अनुदान से ही उन्होंने तेलुगु साहित्य एवं संस्कृति सम्बंधी पुस्तकें हिंदी में लिखवाकर प्रकाशित करते आये। 'शब्द से शताब्दी' और 'खिली एक कली' पुस्तकों में तेलुगु की समकालीन कविता एवं कहानियों के अनुवाद छापे गये। 'आंध्र का इतिहास' अकादमी का एक महत्वपूर्ण प्रकाशन था। सरकारी प्रोत्साहन के अभाव में सन् 2001 से मार्च 2006 तक अकादमी की गतिविधियाँ पूरी तरह स्थगित हो गयीं।

आंध्रप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री स्वर्गीय डॉ.वाई.एस.राजशेखर रेड्डी ने हिंदी अकादमी को अप्रैल 2006 में पुनःप्रारंभ किया और उसे क्षमतापूर्ण ढ़ंग से चलाने के लिए सक्षम, कार्यशील,

परिश्रमी एवं प्रतिभाशाली हिंदी विद्वान आचार्य यार्लगड्डा लक्ष्मीप्रसाद को अध्यक्ष का कार्यभार सौंप दिया। रेड्डी जी ने अकादमी की गतिविधियों को ठीक से चलाने के लिए आवश्यक अनुदान प्रदान करने में बडी उदारता दिखाई, जिससे संस्था राज्य में हिंदी का प्रचार-प्रसार कर सके। इसके अलावा वह, हिंदी साहित्य सृजन के साथ-साथ तेलुगु साहित्य एवं संस्कृति भी हिंदी-अनुवाद के माध्यम से देश भर में फैला सके। रेड्डी के आशय को आचार्य लक्ष्मीप्रसाद ने आचरण का मार्ग दिखाया। आशय की सिद्धि हेतु अकादमी की गतिविधियाँ उन्होंने निर्धारित कीं - साहित्यिक संगोष्ठियों का आयोजन, तेलुगु भाषी वरिष्ठ हिंदी सेवी/लेखक को एक लाख का वार्षिक पुरस्कार, हिंदी में मौलिक एवं अनूदित ग्रंथों का प्रकाशन, तेलुगु भाषी युवा हिंदी लेखक को वार्षिक पुरस्कार, उत्तम अनुवादक को पुरस्कार, हिंदी में लिखे या अनूदित पुस्तकों को प्रकाशन अनुदान प्रदान आदि कार्यक्रमों के द्वारा अध्यक्ष यार्लगड्डा लक्ष्मीप्रसाद ने आंध्रप्रदेश में हिंदी के विकास में अद्‌भुत प्रगति दिखायी।

अध्यक्ष के रूप में यार्लगड्डा लक्ष्मीप्रसाद के 6 वर्ष के कार्यकाल में आंध्रप्रदेश के सभी विश्वविद्यालयों एवं अनेक महाविद्यालयों के हिंदी विभागों में, अपने-अपने क्षेत्र के हिंदी प्रचार-प्रसार एवं हिंदी साहित्य सेवा को उजाले में लाने के लिए संगोष्ठियाँ आयोजित की गयीं। उन संगोष्ठियों में विशेषज्ञों, शोधकर्ताओं के प्रपत्रों के आधार पर तेलुगु भाषाभाषी क्षेत्र में हिंदी प्रचार तथा साहित्य सृजन का इतिहास जुटाने का सराहनीय कार्य किया गया। यह अध्यक्ष यार्लगड्डा की दूरदर्शिता का परिचायक है। इन शोध प्रपत्रों को 'आंध्रप्रदेश में हिंदी-प्रचार आंदोलन का इतिहास' और 'आंध्रप्रदेश में हिंदी साहित्य के विकास का इतिहास' नाम से अकादमी ने ग्रंथ रूप में प्रकाशित किया। अकादमी ने तेलुगु साहित्य, संस्कृति एवं इतिहास को स्पष्ट करनेवाले कई ग्रंथों का भी प्रकाशन किया, जिनमें 'तेलुगु ही प्राचीन है', 'आंध्र का सामाजिक इतिहास', 'तेलुगु साहित्य में सामाजिक नाटक', 'आंध्रप्रदेश की आदिवासी संस्कृति', 'तेलुगु काव्य प्रभा', 'तेलुगु साहित्य सुषमा', 'आंध्र की सांस्कृतिक संरचना', 'आधुनिक तेलुगु काव्य सौरभ', 'सहस्र वर्षों का तेलुगु साहित्य', 'आंध्रप्रदेश का सांस्कृतिक पर्यटन क्षेत्र और लोककलाएँ' आदि प्रमुख हैं। 'दाक्षिणात्यों की नाट्यकला का इतिहास' का प्रकाश्न इस शृंखला में एक महत्वपूर्ण कडी है।

हिंदी साहित्य पर आलोचनात्मक और शोध ग्रंथों को भी अकादमी ने प्रकाशित किया, जिनमें 'बालशौरी रेड्डी और उनका साहित्य : एक अनुशीलन', 'आरिगपूडि : व्यक्ति और रचनाकार', 'आचार्य पी.आदेश्वरराव की कविताएँ : एक अध्ययन', 'हिंदी और तेलुगु का आधुनिक व्यंग्य साहित्य', 'बालकवि बैरागी : व्यक्तित्व और कृतित्व', 'हिंदी और तेलुगु भाषाओं में समानार्थी और भिन्नार्थी शब्द : एक अध्ययन', 'हिंदी की प्रगतिशील समीक्षा और

रामविलास शर्मा' आदि प्रमुख हैं। इनके अतिरिक्त तेलुगु के उत्कृष्ट ग्रंथों के हिंदी अनुवाद को भी अकादमी ने या तो प्रकशित किया, नहीं तो प्रकाशन का अनुदान देकर उन्हें प्रकाश प्रदान किया। इस कोटि में लगभग एक सौ रचनाएँ हैं।

आंध्रप्रदेश और वर्तमान तेलंगाना में हिंदी को बढ़ावा देने में तथा तेलुगु भाषी हिंदी लेखकों एवं अनुवादकों को प्रोत्साहन प्रदान करने में 'आंध्रप्रदेश हिंदी अकादमी' का योगदान सराहनीय है। अकादमी की गतिविधियों के सफल एवं समर्थ कार्यान्वयन में 6 वर्ष की वह अवधि (2006-2012) स्वर्णयुग सदृश है, जब उसे राज्य सराकार और तत्कालीन मुख्यमंत्री का पूरा सहयोग और समर्थन मिला था। तब अकादमी के कार्यक्रमों से हिंदी अध्ययन-अध्यापन, लेखन-अनुवाद के क्षेत्र से जुडे हुए लोगों में भरपूर उत्साह बना रहा। हिंदी की सेवा में अकादमी के योगदान का यही प्रमाण है।

हिंदी के प्रचार एवं साहित्य के विकास में आंध्रप्रदेश और (वर्तमान) तेलंगाना शुरू से ही आगे हैं। तेलुगु भाषी हमेशा अपने हिंदी-प्रेम को दर्शाते ही रहे हैं। वे हिंदी साहित्य में रुचि रखते हैं। हिंदी बराबर सीखते-अध्ययन करते रहे हैं। वे हिंदी साहित्यकारों को पढ़ते और उनका आदर करते हैं। तेलुगु भाषी, हिंदी साहित्य-सृजन में देश के किसी भी हिन्देतर प्रांत से पीछे नहीं हैं। परिमाण और गुणवत्ता - दोनों दृष्टियों से तेलुगु भाषी हिंदी लेखकों की रचनाएँ उत्तम कोटि की प्रमाणित हुई हैं। पुरस्कृत भी हुई हैं। इनका हिंदी भाषा पर इतना अधिकार है कि अगर उनकी रचनाओं के साथ लेखकों के नाम एवं परिचय नहीं दिये जाते, तो उन्हें हिन्देतर प्रांत के हिंदी लेखक की रचना के रूप में नहीं पहचाना जाता। निकट भविष्य में ऐसा एक दिन जरूर आयेगा, जब हिंदी साहित्य के इतिहास में आंध्रप्रदेश और तेलंगाना के हिन्दी साहित्य को स्थान दिया जायेगा।

* * *